International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 9 Issue 2, February 2019,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

राजस्थान में महिला आर्थिक सशक्तिकरण : निर्धारक तत्व

डॉ. योगिता शर्मा, प्राचार्या, जे.बी. शाह गर्ल्स पी.जी. कॉलेज, झुंझुनू, राजस्थान।

प्रस्तावना

राज्य, राष्ट्र का निर्माण ग्रामीण महिलाओं के बिना अकल्पनीय है जबकि सामाजिक सशक्तिकरण महिलाओं के आर्थिक विकास के बिना संभव नहीं है। उभरती आर्थिक शक्ति देश की कुल आबादी की लगभग आद्धी जनसंख्या महिलाओं की है। यद्यपि उद्यमशीलता एक स्वस्थ अर्थव्यवस्था के रखरखाव के लिये महत्वपूर्ण है क्योंकि यह नवाचार व रचनात्मकता है जिसके पफलस्वरूप नए रूप से बेहतर आर्थिक विकास के आविष्कार का कारण बन सकता है जो कि महिलाओं की आर्थिक गतिविधियों और उद्यमिता के लिये विभिन्न सहायक उपाय हैं।

महिलाएँ स्वयं सहायता समूहों के जरिए सामाजिक व आर्थिक बदलाव ला रही हैं। समाज के गरीब वर्गों में महिलाओं के आर्थिक सशक्तिकरण में स्वयं सहायता समूह के माध्यम से महिलाओं को सशक्त बनाया जा सकता है। वर्तमान परिप्रेक्ष्य में महिलाओं ने मेहनत व लगन के बल पर यह साबित कर दिया कि स्वयं सहायता समूह के साथ जुड़कर एक नया मुकाम हासिल किया जा सकता है।

महिला आर्थिक सशक्तिकरण पर कई कारकों का प्रभाव पड़ता है। कतिपय कारक निम्न हैं–

महिला शिक्षा का स्तर –

शिक्षा साधन व साध्य दोनों ही है। शिक्षा महिलाओं के बौद्धिक एवं व्यक्तिव विकास में सहायक है। इसके द्वारा महिलाओं की सामाजिक व आर्थिक स्थिति सुदृढ होती है। शिक्षा लैंगिक विषमता को कम करने में सहायक है। शिक्षा के कारण सशक्तिकरण की प्रक्रिया को गति मिलती है और यह रोजगार प्राप्त करने में सहायक है।

गुगनानी ने दिल्ली में **वयस्क शिक्षा कार्ग्रक्रम** का कमजोर महिला के सशक्तिकरण पर प्रभाव देखकर पाया कि शिक्षा से महिलाओं में आत्मविश्वास, गतिशीलता, तुरन्त निर्णय क्षमता एवं अपने आपको अभिव्यक्त करने की क्षमता का विकास होता है। इस प्रकार महिला शिक्षा आर्थिक सशक्तिकरण में सहायक है।

स्वास्थ्य सेवाओं तक पहुँच

महिलाओं की स्वास्थ्य सुविधओं तक पहुँच महिला आर्थिक सशक्तिकरण का कारण एवं परिणाम दोनों । महिलाओं के स्वस्थ रहने से वे अपनी क्षमता का पूर्ण उपयोग कर किसी भी कार्य को अच्छी तरह कर सकती हैं। रोजगार में संलग्न महिलाओं के आर्थिक रूप से सशक्त होने के कारण स्वास्थ्य सुविधाओं तक पहुँच अधिक होती है। **बी.बी. तुलसीधर** ने भारत में 1981 की जनगणना के परिणामों के आधार पर पाया कि महिला रोजगार से बाल मृत्युदर में कमी आयी है लेकिन महिला शिक्षा का इस पर ज्यादा प्रभाव पड़ा है ।

International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 9 Issue 2, February 2019,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

सम्पत्ति तक पहुँच एवं नियंत्रण

सम्पत्ति तक पहुँच महिलाओं की भौतिक संसाधनों तक पहुँच एवं नियंत्रण को बताता है। यहाँ सम्पत्ति से तात्पर्य चल व अचल सम्पत्ति से है। भूमि, जायदाद, ज्वैलरी आदि सम्पत्ति तक पहुँच से महिलाओं के आत्मविश्वास में वृद्धि होती है। किसी भी बैंक से ऋण लेने में उस व्यक्ति को चल सम्पत्ति एवं अचल सम्पत्ति का ब्यौरा देना होता है। अतः यदि महिलाओं के पास सम्पत्ति है तो उनकी संसाधनों तक पहुँच बढ़ेगी और वह स्वयं का व्यवसाय कर सकती है जो कि आर्थिक रूप से सशक्त करने में सहायक है।

बचत तक पहुँच

राष्ट्रीय पारिवारिक स्वास्थ्य सर्वेक्षण की रिपोर्ट के अनुसार राज्य में कुल 7.5 प्रतिशत महिलाओं का खाता है जिसे वे स्वतंत्रातापूर्वक उपयोग में ले सकती हैं। राज्य में केवल 12.3 प्रतिशत महिलाओं को ही साख कार्यक्रमों की जानकारी है जिसमें से मात्रा 0.6 प्रतिशत महिलाओं ही माईक्रोक्रेडिट कार्यक्रमों के प्रति जागरूक हो रही हैं जो कि आर्थिक सशक्तिकरण की तरफ एक अच्छा कदम है।अतः बचत एवं साख तक पहुँच महिला आर्थिक सशक्तिकरण का एक महत्वपूर्ण निर्धारक तत्व है।

महिला रोजगार का स्तर

रोजगार का प्रत्यक्ष प्रभाव महिलाओं के आर्थिक सशक्तिकरण से होता है। रोजगार से उनको आर्थिक स्वतंत्राता मिलती है जिससे उनमें आत्मविश्वास व कार्यक्षमता में वृद्धि होती है और उनके व्यक्तिव का बहुआयामी विकास होता है। रोजगार के कारण महिलाएँ घर से बाहर कार्यस्थल पर आती है जहाँ उनका विभिन्न व्यक्तियों से विचारों का आदान–प्रदान होता है। परिणामस्वरूप कार्यशील व्यक्तियों के एक संगठन का गठन होता है। रोजगार के कारण महिलाओं को परिवार व समाज के अन्य सदस्यों द्वारा सम्मान मिलता है। इस प्रकार रोजगार महिला आर्थिक सशक्तिकरण का एक महत्वपूर्ण घटक है।

निष्कर्ष

उपरोक्त महिला आर्थिक सशक्तिकरण के निर्धारक तत्व महिलाओं को आर्थिक स्थिति को सुदृढ करते हैं जिससे महिलाएँ स्वतंत्राता पूर्वक आर्थिक निर्णय ले सकती हैं। इस प्रकार महिलाओं में आर्थिक सशक्तिकरण से महिलाओं की घरेलू आर्थिक निर्णयों में भी सहभागिता एवं स्वतंत्राता बढी है जिससे महिलाओं की आर्थिक स्थिति सुदृढ हुई है।

सन्दर्भ ग्रन्थं सूची

1.गवर्मेन्ट ऑफ इंडिया (1986), ''नेशनल पौलसी ऑन एजूकेशन बायोग्राम्स ऑफ एक्शन'' न्यू देहली, मिनिस्ट्री ऑपफ ह्यूमेन रिसोर्स डेवलपमेंट।

2.वर्ल्ड बैंक (1994) ए न्यू एजेन्डा फॉर ह्यूमेन हेल्थ एण्ड न्यूट्रेशन, डेवलपमेन्ट इन प्रैटिस, वर्ल्ड बैंक

3.Gugani, H.R (1994), "Literacy, Liberation and Empowernment of Women", University News, Vol. xxxii, No. 28

4.सन् 2001 की जनगणना के अनुसार

5.सन् 1981 की जनगणना के अनुसार।

6.फैंकबर्ग एवं थॉमस (2001) "मेजरिंग पॉवर, फूड कनजेपशन एण्ड न्यूट्रेशन डिविजन" डिस्कर्शन पेपर नं. 113

7.Nagaich, Sangeeta (2001) "Women Employment and Family Life", in Murty and Gour (eds), Women Work Participation and Empowernment, Problems and 8.Prospectis, RBSA Publisher's S.M.S Highway, Jaipur.

9.Handi, Famida (2001) "Women's Empowerment i Rural India" Peper Persented as the ISTI Conference.

10.Gupta Rakesh (1997) "Empowerment of Women:" Towards a discussion: Maintrem 35.

11.Basu Alaka Malaade and kaushik Basu (1991) "Women's Economic Rales and child survifval: The Case of India Health Transition Review